शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 जनवरी 2018
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

बारेली बोली के लोकगीतों का विवेचन

डॉ. लोहारसिंह ब्राह्मणे
भाषा अध्ययन शाला
देवी अहिल्या विश्वविद्यालय
इंदौर, मध्यप्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

बारेली लोकसाहित्य के भण्डार में लोकगीतों की संख्या अनगिनत है। लोकगीत लोक संस्कृति के समग्र संवाहक है। लोकगीत किसी जाति, समूह और देश की लोकसंस्कृति के परिचायक होते हैं। उनमें जीवन की धड़कनों को सुना जा सकता है। बारेली बोली के लोकगीतों में तीज-त्यौहारों के लोकगीतों में- दिवासा के लोकगीत, नवाई के लोकगीत, दिवाली के लोकगीत, इन्दल के लोकगीत, भगोरिया के लोकगीत, नेवादला के लोकगीत, होली व गाता के लोकगीत और विविध संस्कारों के लोकगीत, जैसे-जन्म संस्कार, विवाह संस्कार एवं मृत्यु संस्कार आदि संस्कारों एवं तीज त्यौहारों के अवसर पर अनेक लोकगीत गाये जाते है, जो बारेला जनजातीय जीवन की लोकसंस्कृति को रेखांकित करते हैं। बारेली लोकसाहित्य में लोकगीत बारेला जनजीवन की हर्षोउल्लासमय अभिव्यक्ति है, जिसके माध्यम से बारेला जनजाति के लोग अपने जीवन को आनन्दमय बनाते हैं।

प्रस्तावना

बारेला जनजाति भील जनजाति की एक उपजाति है, जो मध्यप्रदेश विशेषत: पश्चिम निमाड़ और खानदेश (महाराष्ट्र) में फैली हुई है। यह अपना स्वतंत्र अस्तित्व रखती है। बारेला जनजाति के लोग वर्तमान में जिस बोली का प्रयोग करते हैं, उसे बारेली बोली कहा जाता है। बारेली बोली बड़वानी, खरगोन जिले की बारेला जनजाति की लोक भाषा है। बारेली बोली मुख्य रूप से पश्चिमी निमाड़ के सीमावर्ती क्षेत्रों में बोली जाती है। भाषा की दृष्टि से यह एक स्वतन्त्र इकाई नहीं है, किन्तु लोक व्यवहार में यह यहाँ की प्रचलित लोक भाषा रही है। बारेली बोली निमाड़ी और मालवी भाषा से बहुत अधिक प्रभवित हुई है। बारेला जनजाति के लोगों ने निमाड़ी बोली के सम्पर्क में आने के कारण निमाड़ी बोली के शब्दों को अपनी लोक भाषा में अपना लिया है। बारेली बोली अपने आस-पास के क्षेत्रों से ज्यादा प्रभावित हुई है। बारेली बोली भीली, गुजराती, राजस्थानी, खानदेशी, मराठी, मालवी आदि भाषाओं से बहुत प्रभावित हुई है। बारेला जनजाति के लोग अपना जन्म स्थान गुजरात, राजस्थान, मालवा आदि बताते हैं। इस प्रकार इनकी बोली पर इन भाषाओं का प्रभाव पड़ना स्वाभाविक है। जिस प्रकार से धार, झाबुआ जिले के आदिवासियों की बोलियों पर मालवी, गुजराती, राजस्थानी का प्रभाव है, उसी प्रकार बड़वानी, खरगोन जिलों में निवास करने वाले बारेला जनजाति की लोक भाषा पर निमाड़ी, खानदेशी और मराठी का स्पष्ट प्रभाव दिखाई देता है। बारेली बोली निमाड़ी और मालवी भाषा से बहुत अधिक प्रभावित है। बारेला जनजाति के लोग अपने प्रत्येक पर्व एवं त्यौहारों को बड़े हर्षोल्लास, उमंग, नाच-गाने, पूजा-पाठ आदि पारंपरिक रूप से मनाते हैं। बारेली लोकसाहित्य के भण्डार में लोकगीतों की संख्या

अनगिनत है। जैसे तीज-त्यौहार के लोकगीतों में दिवास, नवाई, दिवाली, इन्दल, भगारिया, नेवादला या मान के लोकगीत एवं गाता के लोकगीत। विविध संस्कारों के लोकगीतों में- जन्म संस्कार, विवाह संस्कार एवं मुत्यू संस्कार संबंधीत लोकगीत। देवी-देवताओं के लोकगीतों में-कुलदेवी, कुलदेवता, ग्रामदेवता, खेतरपालबाबा, राणीकाजलमाता, कणसरी माता के लोकगीत और श्रम परिहार एवं मनोरंजन के लोकगीतों के माध्यम से बारेली लोकसंस्कृति, रीति-रिवाज, परम्पराएँ, आस्थाएँ, विश्वास एवं कुलदेवी-देवताओं के बारे में पता चलता है।

बारेला जनजाति का सामान्य परिचय

श्रीचन्द जैन बारेला जनजाति के बारे में लिखते हैं, "भीलों से अधिक तथा भिलालों से अपेक्षाकृत कम प्रगतिशील ये आदिवासी निमाड़ में अधिक रहते हैं। होल्कर राज्य की जनगणना से प्रकट है कि ये खरगोन, सेगाँव तथा भीकनगाँव परगनों में काफी बड़ी संख्या में है। सतपुड़ा के अंचल में विशेष रूप से रहने वाले ये बारेला भी भिलालों की भाँति स्वयं को राजपूत कहते हैं। इनके अनेक गोत्र ऐसे हैं जो राजपूतों से मिलते हैं। समान गोत्रों में विवाह-सम्बन्ध निषिद्ध है। भीलों की भाँति इनके विविध गोत्रों का नामकरण वृक्षों, पशुओं एवं पक्षियों पर आधारित है। गोत्रों से सम्बन्धित पादप, पशु-पक्षी आदि इनके लिए पुनीत हैं और पूर्ण प्रयास के साथ वे इनका संरक्षण करते हैं।"1

प्रेमनारायण श्रीवास्तव ने पश्चिम निमाड़ गजेटियर में लिखा है कि, "बारेले केवल निमाड़ तक ही सीमित हैं, जिसमें से तीन चौथाई व्यक्ति अकेले सेंधवा में रहते हैं। दूसरा स्थान आसपास के भू-भाग खरगोन तथा सेगांव का हैं।"2

डॉ.नेमीचन्द जैन ने बारेलाओं के बारे में लिखा है कि, "बारेला पश्चिम निमाड़ (मध्यप्रदेश) का एक खेतिहर कबीला है। पश्चिम निमाड़ की सेंधवा तहसील के निकटवर्ती क्षेत्रों में यह फैला हुआ है। जहाँ तक इसकी आचरण-संहिता का प्रश्न है, उन पर राजस्थान और गुजरात की संस्कृतियों का स्पष्ट प्रतिबिम्ब दिखायी पड़ता है। सतपुड़ा की प्रजातियों ने भी उनके रहन-सहन को पर्याप्त प्रभावित किया है।"3

बारेलाओं का पहनावा व वेष-भूषा एवं रहन-सहन सौष्ठव राजपूतों जैसा ही है वे अपने आप को राजपूत ही कहते हैं। इनके पहनावे में महाराष्ट्रीयन पहनावे का प्रभाव भी परिलक्षित होता है। पुराने समय में बारेला पुरुष कम वस्त्र धारण करते थे, किन्तु वर्तमान समय में पूर्ण वस्त्र धारण करते हैं। पुरुष- धोती, कुर्ता, पगड़ी या टोपी भी सिर पर रखते हैं। महिलाएँ 18-19 फीट की नाटी या साड़ी तथा वृद्ध महिलाएँ घाघरा भी पहनती है। बारेला लोग पर्व-त्यौहारों एवं हाट-बाजार आदि के अवसर पर बहुत ही सज-धजकर जाते हैं। बारेला जनजाति की महिलाएँ व युवतियाँ आभूषण प्रिय होती है वे अधिकांश रूप से चाँदी के गहने पहनना अधिक पसंद करती हैं, जिसमें कडी, वाकला, तुड़ा, बाहट्या, कुरदुड़्, विच्छया, हेतेवा, घूमरा, टागली, घुगरिया वावी टागली, पाटड़्, छिबरा, वावा, बाहवा, बाजीबंद आदि पहनते हैं । बारेला पुरूष व युवक कानों में सोने की साकव (साकल) व हाथों में चाँदी का कड़ा पहनना नहीं भूलते है। बारेलाओं का पहनावा बहुत ही आकर्षक एवं सादगीपूर्ण है।

बारेला जनजाति की उत्पत्ति

म.प्र. एक आदिवासी प्रधान राज्य है। 12 वीं एवं 13 वीं शताब्दी में भील, राजपूतों से घुल-मिल गए। शरीर से सुदृढ़ एवं साहसी होने के कारण

भील लोग राजपूत राजाओं की सेना में रहते थे। विशेषकर महाराणा प्रताप ने भीलों को अपनी सेना में अधिक महत्त्व दिया। भीलों व राजपूतों के संबंध कालान्तर में विवाह संबंध तक हो गए। परन्तु जिन भीलों एवं राजपूतों के संबंध में तालमेल नहीं हुआ। ऐसे भील जनजाति के लोग भागकर घने जंगलों में रहना शुरू कर दिया। फलस्वरूप भीलों के इस वर्ग का रहन-सहन, रीति-रिवाज एवं आचार-विचार में उल्लेखनीय परिवर्तन हुआ तथा इनसे ही एक नई उपजाति 'बारेला' का उदय हुआ। भीलों के इस वर्ग के रहन-सहन रीति-रिवाज एवं आचार-विचार में उल्लेखनीय परिर्वतन हुआ। उन्होंने अपनी अलग सांस्कृतिक विरासत का विकास किया। इनसे ही एक नई उपजाति 'बारेला' का उदय हुआ। यही आगे चलकर अपनी परम्पराओं और रीति-रिवाजों के साथ वर्तमान समय में अपनी अलग पहचान बना चुकी है। बारेला जनजाति की व्युत्पत्ति के संबंध में गोविन्दराम का कथन है कि, "भील जनजाति के लोग प्राचीनकाल में राजपूतों से झगड़कर घने-जंगलों एवं पहाड़ों के बारे-बारे (किनारे-किनारे) रहने के कारण ही ये लोग 'बारेला' कहलाते हैं।"4

अधिकाँश लोगों के मतानुसार बारेला जनजाति का उद्भव गुजरात के जूनागढ, पावागढ़ तथा गुजरात के एक छोटे से गाँव 'बारापाला' से ही बारेला उपजाति का उद्भव मानते हैं। पूर्वकाल में सामाजिक, आर्थिक परिस्थितियों के कारण ही लोग वहाँ से पलायन कर निमाड़ के अलग-अलग क्षेत्रों में बस गये, जिन्हें 'बारेला' कहा जाने लगा। बारेला जनजाति के लोग म.प्र. के बड़वानी, खरगोन, झाबुआ, धार, खण्डवा आदि जिलों में निवास करते हैं। यहीं से पलायन कर कुछ लोग मजदूरी करने के लिए महाराष्ट्र में चले गए जिन्हें 'पावरा' कहा जाता है। लेकिन वह बारेला जनजाति के ही लोग है और बारेली बोली ही बोलते हैं। बारेला जनजाति के प्रारंभिक इतिहास एवं उत्पत्ति के बारे में क्रमबद्ध प्रामाणिक सामग्री का अभाव है।

बारेली बोली का सामान्य परिचय

भील जनजाति की बारेला उपजाति समाज या लोगों द्वारा बोली जाने वाली भाषा ही 'बारेली बोली' कहलाती है। बारेला जनजाति के लोग वर्तमान में जिस बोली का प्रयोग करते हैं उसे बारेली बोली कहा जाता है। बारेला निकटवर्ती एक अल्पसंख्यक भील वंश है। ग्रियर्सन भाषा सर्वेक्षण के अनुसार, "बारेले बारेली विभाषा का उपयोग करते हैं।"5

बारेली लोकगीतों का विवेचन

बारेला लोकजीवन में विवाह एक प्रमुख संस्कार है। इस अवसर पर अनेक गीत गाये जाते हैं, जो विवाह गीत के नाम से प्रसिद्ध हैं। निमाड़ का प्रत्येक मांगलिक कार्य गणेश-पूजा के बिना सम्पन्न नहीं होता है। विवाह के समय स्मृति गीत गाया जाता है, जिसके माध्यम से पूर्वजों के पास विवाह का संदेश भेजा जाता है। बारेलाओं में विवाह के गीतों में छाक्या गीत, दहेज गीत, वर पक्ष-वधू पक्ष के गीत एवं मनोरंजन के अनेक गीत गाये जाते हैं। दहेज प्रथा का यह गीत कितना भावुक है जो गाँव की अनपढ़ महिलाओं एवं युवतियों द्वारा व्यक्त किया गया है-

विवाह के गीत

माडी हय पौहया फैकी दे, बैना रोडे वो।
माडी हय पौहया फैकी दे, बैना रोडे वो।
बाबा हय पौहया फैकी दे, बैना रोडे वो।
बाबा हय पौहया फैकी दे, बैना रोडे वो।
दादा हय पौहया फैकी दे, बैना रोडे वो।

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 जनवरी 2018
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

दादा हय पौहया फैकी दे, बैना रोडे वो।
भाबी हय पौहया फैकी दे, बैना रोडे वो।
भाबी हय पौहया फैकी दे, बैना रोडे वो। 6

इस गीत में दहेज लेने वाले माता-पिता पर व्यंग्य करती हुई कहती है कि-हे लड़की के माता-पिता, दादा (भाई), काका! तुम सब मिलकर वह पैसे (दहेज के पैसे) वापस लौटा दो ? लड़की बहुत रो रही है तथा उसे शादी नहीं करना है। यही मार्मिक भाव गीत के माध्यम से व्यक्त होता है। इस तरह के अनेक विवाह लोकगीत हैं, जो दहेज प्रथा को व्यक्त करते हैं।

वर पक्ष के गीत

बारे सीसी लेणो छेने, आमरी बेनीक देणो छे।
पोन्दरे सीसी लेणो छेने, आमरी बेनीक देणो छे।
बुकडू खाईन जाणो छेने, आमरी बेनीक देणो छे।
बुकडू खाईन जाणो छेने, आमरी बेनीक देणो छे।
कुकडा बुकडा खाणो छेने, आमरी बेनीक देणो छे।
कुकडा बुकडा खाणो छेने, आमरी बेनीक देणो छे।7

विवाह के अवसर पर यह गीत गाया जाता है। जब बारात लड़के के घर पहुँचने वाली होती है, तब इस प्रकार के गीत गाये जाते हैं। लड़की वाले कहते हैं कि हमें पन्द्रह बोतल दारू लेना है और चार प्रकार के जेवर भी लेना है और खाने में हमें एक बकरा तथा दस बारह मुर्गे भी लेना है और लेकर ही रहेंगे। यह सभी वस्तुएँ मिलने पर ही हम अपनी लड़की को यहाँ छोड़ेगे ? इस प्रकार बारेला जनजाति के लोग आपस में दहेज एवं खान-पान की बातें करते हैं। यह सभी गीत के माध्यम से प्रस्तुत करते हैं और बकरा खाकर, दारू पीकर ही जाते हैं। यह बारेलाओं की सदियों से चली आ रही परम्परा है, जो आज भी गाँवों में निभाई जा रही है। बारेला जनजाति की सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, सांस्कृतिक एवं वैचारिक पृष्ठभूमि इन लोकगीतों में दिखाई देती है।

प्रकुति संबंधी गीत

आमेलीने नीवों पेवों फुले रे, मारा भाय।
आमेलीने नीवों पेवों फुले रे, मारा भाय।
आमेलीने फुले घणा लाग्या रे, मारा भाय।
आमेलीने फुले घणा लाग्या रे, मारा भाय।
आमेलीने खाटा मीठा फुले रे, मारा भाय।
आमेलीने खाटा मीठा फुले रे, मारा भाय।
आमेलीने खाटी मीठी भाजी रे, मारा भाय।
आमेलीने खाटी मीठी भाजी रे, मारा भाय। 8

प्रस्तुत गीत में बारेला समाज के पारिवारिक जीवन में वृक्षों का बड़ा महत्त्व होता है। वृक्ष भी आदिवासियों के साथी होते हैं। ऐसे वृक्ष अनेक है जिस पर जनजातियों का जीवन निर्भर होता है। जैसे-महुँआ, इमली, आम, पलास, सागवान, नीम आदि। इस गीत में महिला इमली के पेड़ की सुन्दरता का वर्णन करते हुए कहती है किइमली की डगाल कितनी सुन्दर है, छोटी-छोटी है पर मजबूत है। इमली के नुकीले पत्तों की सब्जी बनाकर खाते हैं। इमली के फूल और फल भी खट्टे-मीठे होते हैं। इस प्रकार बारेला जनजाति के लोग इमली के पेड़ को अपने घर के आस-पास लगाते हैं।

नवाई लोकगीत

आपेणा रे देसों मा वासुणया नी मैवे,
कांसी झपेलों वीणावों जीवै...।
आपेणा रे देसों मा वासुणया नी मैवे,
कांसी घोरे सीवेड़ों जीवै...।
आपेणा रे देसों मा लाकेड़ा नी मैवे,
कांसी घोरे बणावों जीवै...। 9

बारेला जनजाति के लोग अपना मकान या घर घास या लकड़ी का ही बनाते हैं। इस गीत में बारेला पुरुष एवं महिलाएँ अपना घर बनाने का

भाव व्यक्त करते हुए कहते हैं कि अपने देशों के जंगलों में घर बनाने के लिए बाँस, सागवान, पलाश आदि वृक्षों की लकड़ी की आवश्यकता होती है, जो हमारे देश में नहीं है। हम लोग घर कैसे बनायेंगे ? घर के दरवाजे, छत एवं दीवारे (टट्टे) बनाने के लिए बाँस कहाँ से लायेंगे ? क्योंकि अपने देश के जंगलों में बाँस नहीं हैं। कवेलू बनाकर पकाने के लिए हमारे देश में लकड़ी नहीं है, तो हम घर कहाँ से बना लेंगे ? इस प्रकार गीत के माध्यम से बारेला जनजाति के लोग घर बनाने की इच्छाओं एवं भावनाओं को लोकगीतों के द्वारा व्यक्त करते हैं।

दिवाली के गीत

सरगे गोथी उतरी राणी दिवावी,
कुणीने घरे उतरी राणी दिवावी।
पटल्या पूजारा ने घरे उतरी,
राणी दिवावी रे राणी दिवावीं।
घणा चूखा गुड़ खादा,
वली घी खांण खवाड़े राणी दिवावी।10

कार्तिक अमावस्या पर गाँव में मकानों को दीपमालाओं से सुसज्जित किया जाता हैं। यह त्यौहार हिन्दुओं के अत्यंत प्रसिद्ध त्यौहारों में से एक है। इस अवसर पर घर-घर में पकवान बनाये जाते हैं। बारेला जनजाति के लोग दिवाली को स्वर्ग से आई हुई मानते हैं और गाँव के मुखिया के घर आयी है। रानी दिवाली किसके घर आई है ? पटेल, पुजारी के घर आकर उतरी है। दीपावली चावल, गुड़ तथा घी और खांण भी बहुत खिलाती है। हे दीपमालिका रानी! चूखा, गुड़, खांण और घी बहुत खाया है। यह त्यौहार आनन्ददायक होने के कारण दिवाली को स्वर्ग से उतरने वाली कहाँ है। यही बात बारेला जनजाति की महिलाएँ गीत के माध्यम से व्यक्त करती है।

होली के गीत

होवी दिवावी दुये बहिणे,
बठी ने विचारे कोरे।
होवी पुठी आट्या ने कुट्या,
दिवावी पुठी ताया।
दिवावी भर सियाले आवी,
होवी आवी भर उनावे।
दुये बयुणे मिली बठी,
बठी ने विचारे कोरे।11

बारेला जनजाति की महिलाएँ होली और दिवाली पर्व की समानता एवं असमानता व्यक्त करते हुए गीत गाती हुई कहती हैं कि-होली माता और दीपावली दोनों बहनें हैं। दोनों बैठकर विचार करती हैं। होली के समय महिलाएँ आटा पीसती है तथा धान कूटती हैं। दिवाली पर ताये मिलते हैं। दीपावली बिलकुल शीतकाल में आती है और होली ग्रीष्मकाल में।

इन्दल के गीत

भला नाचे भला नाचे इन्दीराजाने,
ढ़ावू भला नाचे...।
भला नाचे भला नाचे इन्दीराजाने,
ढ़ावू भला नाचे...।
भला नाचे भला नाचे इन्दीराजाने,
पाटला भला नाचे...। 12

इन्दल उत्सव के आखिरी दिन इन्दीराजा को नचाते हैं और नचाते हुए बारेला जनजाति की महिलाएँ गीत गाती है कि इन्दीराजा की डाली (कलम वृक्ष की डगाल) बहुत ही प्रसन्न होकर खुशी-खुशी से नाच रही है। इन्दीराजा के पटिए (जिस पर इन्दीराजा की पूजा-पाठ की जाती है) को ग्राम या गाँव के लोग तथा पुजारी (बड़वा) इन्दीराजा के पाटले को खुशी-खुशी से नचाते हैं और नाचते भी है। पटिए पर दीया सदैव जलता रहता है, वह कभी भी बुझता नहीं है।

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 जनवरी 2018
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

बारेला जनजाति के लोग इन्दल उत्सव समाप्त होने पर इन्दीराजा, इन्दीराजा की डगालें, इन्दीराजा के पाटले, इन्दीराजा का कुंवारा लड़का, गाँव के समस्त लोगों को खुशी-खुशी से नचाते हैं। इन सभी दृश्यों को बारेला जाति की महिलाएँ नाचते हुए यह गीत गाती हैं और इन्दीराजा की अन्तिम स्थिति का वर्णन अपने लोकगीतों के माध्यम से व्यक्त करती हैं।

भगोरिया के गीत

भंगरयू देखणे जाणे लागे,
गाड़ी मारी गिरवे मेलाय गोयी वा।
भंगरयू देखणे जाणे लागे,
बुल्ये मारा गिरवे मेलाय गोया वा।
भंगरयू देखणे जाणे लागे,
घुघरया मारा गिरवे मेलाय गोया वा।13

आदिवासी बारेला जनजाति के लोग भगोरिया देखने के लिए बैलगाड़ी लेकर जाते हैं। बैलों को सजाकर, गाड़ी को सजाकर, बैलांे के गले में घुँघरू बाँधकर भगोरिया मैले में जाते हैं। एक बारेला पुरूष अपनी गरीबी के कारण सब कुछ गिरवी रख देता है और कहता है कि भगोरिया देखने की बहुत इच्छा हो रही है, लेकिन मेरी बैलगाड़ी गिरवी रखी हुई है। मैं कैसे जा सकता हूँ ? गीत की अगली पंक्ति में वह कहता है कि बैलों के गले में बाँधने वाले घुँघरू भी नहीं है, वह भी मैंने बेच दिये हैं। गरीबी के कारण बारेला जनजाति के लोग गाय, बैल, गाड़ी तथा घुँघरू को भी बेच देते हैं। इस प्रकार बारेला जाति के लोग अपनी गरीबी का वर्णन भगोरिया के लोकगीतों के माध्यम से व्यक्त करते हैं।

श्रम-परिहास के गीत

बारेला जनजाति के लोग श्रम परिहार के लिये कृषि करते समय, हल चलाते समय गीत गाकर अपने कार्य को सुगम बना लेते हैं। यह उनकी जीवन के प्रति आस्था का प्रतीक है।

कावठिया खेतोमा होवे गेरो,
होवे गेरो होवेकी जुवानी वा।
रातला माविया मा होवे गेरो,
होवे टूट्यू हवेकी जुवानी वा। 14

इस गीत में हल चलाते हुए युवक गीत गाता हुआ कहता है कि काली मिट्टी वाले खेत में हल चलाता हूँ तो ऐसा लगता है कि मेरी जवानी आना अभी बाकी है, क्योंकि अभी तक हल चलाना नहीं आता है। लाल मिट्टी वाले खेत में हल चलाता हूँ तो मुझे पत्थरों का पता नहीं चलता है और हल टूट जाता है। इस प्रकार गीत के माध्यम से युवक हल चलाते समय श्रम से सम्बंधित गीत गाता है। इन गीतों में युवा चेतना एवं जीवन के प्रति सार्थक नजरिया दृष्टिगोचर होता है।

बारेली लोकगीतों का महत्त्व

बारेला जनजातीय समाज के तीज-त्यौहार नया साल शुरू होते ही आ जाते हैं, जो अपनी ही रीति-रिवाज एवं परम्परानुसार मनाये जाते हैं। जैसे-दितवारिया, दिवासा, नवाई, दिवाली, इन्दल, भगोरिया, होली, मेले (नेवादला), गाता उत्सव, जातरा आदि। इस प्रकार इनके उत्सवों व तीज-त्यौहारों के लोकगीतों के माध्यम से इनकी लोकसंस्कृति, रीति-रिवाज, परम्पराएँ, आस्थाएँ, विष्वास एवं कुलदेवी-देवताओं के बारे में पता चलता है। आदिवासी बारेला जनजातीय समाज में अनेक लोक देवी-देवता को भी पूजते हैं, जिसमें कुलदेवी, कुलदेवता, खेरतपाला बाबा, बाबदेव, राणीकाजल माता, नर्मदा माता, परिवार देवता, ग्रामदेवता, भीलटबाबा आदि देवी-देवता है। इसके अतिरिक्त भी अनेक लोक देवी-देवता है जैसे- धरती माता, कणसरी माता, देवमोगरा माता,

कोचरा माता, आसरावी माता, होवी (होली) माता, पीरबाबा, आयखेड़ा, पातालदेवता, हनुवात बाबा, पाया बाबा, राजू पान्दू, गांडू ठाकुर, कावू राणू, कुंदू राणू, साटु रावत, भूरियू डगोर आदि देवी-देवता हैं, जिनकी बारेला समाज में पूजा-पाठ की जाती हैै। इन देवी-देवताओं की पूजा-पाठ किए बिना कोई भी पर्व व त्यौहारों का आयोजन की कल्पना भी नहीं की जा सकती है। क्योंकि इनके पर्व व त्यौहारों के अवसर पर लोकदेवी-देवताओं की पूजा-पाठ करते समय बारेली महिलाएँ व युवतियाँ प्रत्येक लोकदेवी-देवताओं से संबंधित अनेक लोकगीतों को गाती है, जो गीत प्रत्येक देवी-देवताओं को आह्वान कर उसकी स्तुति की जाती है।

निष्कर्ष

बारेला जनजाति की समृद्ध लोक परम्परा अपने ढंग में निराली है। इनके लोकगीतों को गाँव के युवक-युवतियाँ एवं लोकगायक ही गा रहे हैं। इस जनजाति समाज में लोकगीतों को लिपिबद्ध करने का प्रयास कम हुआ है परन्तु मौखिक रूप में प्रचुर मात्रा में मिलता है। इस जनजाति के अधिकांष लोग अषिक्षित व अनपढ़ है। इनके लोकगीतों का प्रचलन आज भी मौखिक रूप में ही है, परन्तु आधुनिकता के प्रभाव से लोकगीतों को संग्रहीत करने का दौर चला है। बारेला लोकगीतों में इस जनजाति की संस्कृति, परम्पराएँ, व्यवहार और समाज की वास्तविक स्थिति का परिचय मिलता है। बारेला जनजति के लोगों में आई चेतना, जागरूकता व परम्पराओं के प्रति आग्रह भी इन लोकगीतों का परिचय बना हैं। शिक्षा ने इस समाज को आधुनिक संसाधनों से जोड़ा है, जो एक सुखद भविष्य का संकेत है।

संदर्भ ग्रंथ

1. डॉ. श्रीचन्द्र जैन, वनवासी भील और उनकी संस्कृति, पृष्ठ 35

2. प्रेमनारायण श्रीवास्तव, पश्चिम निमाड़ गजेटियर, पृष्ठ 97

3. डॉ. नेमीचन्द जैन, भीली का भाषा शास्त्रीय अध्ययन, पृष्ठ 216

4. श्री गोविन्दराम, ग्राम-चाटली तह. निवाली बड़वानी से साक्षात्कार

5. डॉ. नेमीचन्द जैन, भीली का भाषा शास्त्रीय अध्ययन, पृष्ठ 217

6. मोहबाई, ईलूबाई ब्राह्मणे, ग्राम-चाटली, तह. निवाली बड़वानी से प्राप्त

7. जामबाई, रामबाई सोलंकी ग्राम-वासवी, तह. निवाली बड़वानी से प्राप्त

8. ममतबाई डावर ग्राम झाकर, तह. निवाली बडवानी से प्राप्त

9. मदन महाराज ग्राम-दिवानी तह. निवाली बड़वानी से साक्षात्कार

10. ईश्वर ब्राह्मणे, ग्राम-चाटली तह. निवाली बड़वानी से साक्षात्कार

11. बाटीबाई, बंजारीबाई ग्राम-चाटली तह. निवाली बड़वानी से साक्षात्कार

12 वही

13. रेलक्या बाई, सागराबाई ग्राम-दोंगल्यापानी निवाली बड़वानी से साक्षात्कार

14. प्रेमसिंग ब्राह्मणे, ग्राम-चाटली तह. निवाली बड़वानी से साक्षात्कार